अच्छे विचारों से शुद्ध और सत्य कार्य उत्पन्न होते हैं। सत्य कार्यों से शुद्ध जीवन प्राप्त होता है और शुद्ध जीवन से सर्वानन्द प्राप्त होता है।

खेती री बातां

सेवा के लिए पैसे की ज़रुरत नहीं होती, ज़रुरत है अपने संकुचित विचार छोड़ने की।

वर्ष–17 अंक–10 मासिक पत्रिका आर.एन.आई – 70296/98 5 अक्टूबर 2014 वार्षिक शुल्क –12 रुपये

सरकार तलाशेगी खजूर उत्पादकों को बायबैक गारंटी देने की संभावनाएं

जयपुर, 18 सितम्बर। कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि राज्य में खजूर की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार खजूर उत्पादकों को बायबैक गारंटी देने की संभावनाओं की तलाश करेगी। उन्होंने बताया कि इससे किसानों की विपणन की समस्या का तो समाधान होगा ही साथ ही उन्हें उनकी फसल का उचित मूल्य भी मिल सकेगा।

कृषि मंत्री ने यह जानकारी गुरूवार को पंत कृषि भवन में टिश्यू कल्चर के पौधे उपलब्ध कराने वाली दो निजी कंपनियों के प्रस्तुतीकरण के दौरान दी। श्री सैनी ने उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों को खजूर के विपणन और प्रसंस्करण के लिए विशेष कार्ययोजना बनाने के लिए निर्देश दिए। उन्होंने उद्यान विभाग के जैसलमेर के सगरा भोजका और बीकानेर के खारा फार्म पर खजूर की बम्पर पैदावार पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि माननीया मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कृषि क्षेत्र में जो सपने देखे थे, वे अब साकार हो रहे हैं।

श्री सैनी ने बताया कि 12 जिलों बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, जोधपुर, नागौर, पाली, सिरोही, जालोर और झुंझुनूं को खजूर पौध रोपण परियोजना में शामिल किया गया है। इन जिलों के किसानों को अनुदान पर खजूर के टिश्यू कल्चर आधारित पौधे उपलब्ध करवाए जाएंगे। कृषि मंत्री ने बताया कि अभी हमारे देश में प्रतिवर्ष 2 लाख टन से भी ज्यादा मात्रा में खजूर का आयात किया जा रहा है। हमारा प्रयास होगा कि राज्य में इतना खजूर का उत्पादन हो, जिससे हम देश की मांग की पूर्ति करने के साथ ही खजूर का निर्यात करके अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी अलग पहचान बनाएं।

श्री सैनी के समक्ष आज गुजरात की कच्छ क्रॉप सर्विस लिमिटेड और तेलंगाना की एसीई प्रयोगशाला कंपनियों के प्रतिनिधियों ने टिश्यू कल्चर पौंधों से सम्बंधित अपना प्रस्तुतीकरण दिया। इस प्रस्तुतीकरण के दौरान उद्यानिकी विभाग के प्रमुख शासन सचिव श्री बीके मीणा, उद्यान विभाग के निदेशक श्री धमेन्द्र भटनागर सहित इस विभाग के उच्चाधिकारी और कंपनी के प्रतिनिधि मौजूद थे।

माननीय कृषि मंत्री को 61 वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

प्रदेश के कृषि मंत्री माननीय श्री प्रभुलाल सैनी अपने जीवन के 60 बंसत पूर्ण कर 25 सितम्बर को 61 वें वर्ष में प्रवेश किया। प्रदेश के दूसरी बार कृषि मंत्री बने श्री सैनी ने वकालत की पढ़ाई के उपरान्त 1981 में आवां ग्राम पंचायत में सरपंच के पद से शुरु हुआ उनका राजनीति व किसान सेवा सफर अनवरत रुप से जारी है। इन्होनें कृषि, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य, उद्यानिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास कार्य कराएं है। राज्य कृषि नीति, कृषि प्रसंस्करण एवं कृषि व्यवसाय प्रोत्साहन नीति, जैतुन रिफाइनरी, सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस, नई मंडियाँ, नई प्रयोगशालाए स्थापित कराकर कृषि को नया आयाम दिया है तथा कृषकों की समृद्दि के द्वारा खोले है।

रबी 2014–15 हेतु प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित

राजस्थान राज्य बीज निगम ने रबी 2014–15 में सामान्य वितरण के लिए प्रमाणित/सत्यचिन्हित बीजों की विक्रय दरें घोषित की हैं:–

फसल	अवधि/किस्म	विक्रय मूल्य (रू./किलो)
सरसों	10 वर्ष से अधिक केरीओवर बीज	45
	10 वर्ष से अधिक नवउत्पादित बीज	50
	10 वर्ष से कम नवउत्पादित एवं केरीओवर बीज	48
चना	समस्त किस्में	37
तारामीरा	10 वर्ष से अधिक	42
	10 वर्ष से कम	40
जीरा	समस्त किस्में	180
सौंफ	समस्त किस्में	100

सड़कों के किनारों से जल्द हटेगी जहरीली झरमरी खरपतवार

कृषि मंत्री श्री सैनी ने जनसुनवाई के दौरान उपस्थित जनसमुदाय को आश्वस्त किया कि सड़कों के किनारे उग रही जहरीली झरमरी खरपतवार को जल्द समूल नष्ट कर दिया जाएगा। श्री सैनी ने कहा कि इस सम्बंध में उन्होंने उदयपुर जिला कलक्टर श्री वेदप्रकाश से बात कर ली है और उन्होंने राष्ट्रीय, राज्य, जिला सड़कों सहित अन्य सभी सड़कों से मनरेगा के माध्यम से झरमरी खरपतवार को जल्द हटाने की बात कही है। श्री सैनी ने कहा कि कृषि अधिकारियों को भी निर्देश दे दिए हैं कि वे इसको नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी तैयार करें।

कृषि में रोटावेटर की उपयोगिता

रोटावेटर कृषि में खेत की तैयारी के लिए एक अति आधुनिक यंत्र है। इसे रोटरी टिलर के नाम से भी जाना जाता है। एक ही बार में खेत की सम्पूर्ण तैयारी जैसे– हकाई, जुताई, खरपतवार काटकर मिलाना, पाटा लगाना इत्यादि कार्य के लिए रोटावेटर एक अत्यन्त उपयोगी ट्रेक्टर चलित यंत्र है। यह ट्रेक्टर की खिंचाव शक्ति के साथ–साथ पी.टी.ओ. द्वारा संचालित होता है। इस यंत्र में एक शॉफ्ट लगी होती है जो गियर बॉक्स में लगी चेन से संचालित होती है। शॉफ्ट पर अंग्रेजी के L या R आकार की 30–60 पत्तियाँ (चाक) लगी होती हैं जिनके घूमने से मिट्टी तथा खरपतवार कटकर आपस में मिल जाते हैं। यह यंत्र 6 से 10 ईंच गहराई तक काम करता है। ट्रेक्टर की अश्व शक्ति के अनुसार विभिन्न चौड़ाई वाले जैसे 1.0 मी., 1.25 मी. एवं 1.5 मी. के रोटावेटर उपलब्ध हैं। रोटावेटर के निम्नलिखित लाभ हैं–

★खेत को अच्छा तैयार करना, भूमि में नमी का संरक्षण कर फसल पर सूखे के प्रभाव में कमी करना।

★फसल अवशेष व खरपतवारों को बारीक टुकड़ों में काटकर मिट्टी में भली–भांति मिला देता है। जिससे फसल में खरपतवारों में कमी आती है तथा मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की अधिकता तथा दीमक का प्रकोप भी कम होता है।

★राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत किसानों को रोटावेटर खरीद पर मूल्य का 50 प्रतिशत या अधिकतम राशि 35,000/– रुपये का अनुदान देय है। अनुदान प्राप्ति के लिए अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में संपर्क करें।

सूचना

जिन किसान भाईयों की "खेती री बातां" अखबार की सदस्यता अवधि समाप्त हो चुकी है, वह आज ही अपने नजदीकी कृषि कार्यालय द्वारा या स्वयं मनीआर्डर भेजकर पुनः अपना पंजीकरण करवायें।

अन्तरराष्ट्रीय पारिवारिक खेती वर्ष

जयपुर, 25 सितम्बर। संयुक्त राष्ट्र के ने वर्ष 2014 को अन्तरराष्ट्रीय पारिवारिक खेती वर्ष के रूप में मानने की घोषणा की है। खाद्य एवं कृषि संगठन इस वर्ष टिकाऊ पारिवारिक खेती के अनुकूल कृषि, पर्यावरण और सामाजिक नीतियों के विकास के लिए सहायता प्रदान करने, ज्ञान, संचार और सार्वजनिक जागरूकता को बढावा देने, पारिवारिक खेती की आवश्यकताओं, संभावनाओं और बाधाओं के बारे में बेहतर समझ कायम करने के लिए अभियान चलाएगा।

गौरतलब है कि पारिवारिक खेती विश्व की कृषि जैव विविधता को संरक्षित और और परम्परागत खाद्य उत्पादकों का संरक्षण करती है। विश्व खाद्य दिवस 16 अक्टूबर को मनाया जायेगा। पारिवारिक खेती वर्ष अवधारणा पारिवारिक किसान **"विश्व का पोषण – धरती की देखभाल"** रखी गयी है

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

www.krishi.rajasthan.gov.in

▶ खेती की उन्नत तकनीक अपनाएं: भरपूर फसल व मुनाफा पाएं...................... पृष्ठ 2

▶ अक्टूबर माह के ......
▶ परख
▶ कल की बीमारियों का ..... पृष्ठ 3

▶ समास्याग्रस्त खरपतवार.....
▶ जिप्सम उपयोग का ....
▶ संतुलित उर्वरक डालें..........
▶ संरक्षित पानी का बेहतर.....
▶ आरा मक्खी........ पृष्ठ 4

दूरभाष – 0141-5116240, 2227365/354

खेती की उन्नत तकनीक अपनाएं : भरपूर फसल व मुनाफा पाएं

फसल	किस्म	पकाव अवधि (दिनों में)	उपज (क्वि./है.)	बीज दर (किलो/है.)	बुवाई पूर्व उर्वरक (किलो प्रति है.)		खडी फसल में यूरिया (किलो/है.)	कतारों के बीच दूरी (सेमी.)	विशेष विवरण
					विकल्प–1 (डीएपी + यूरिया)	विकल्प–2 (एसएसपी +यूरिया)			
गेहूँ	राज मोल्या रोधक–1	120–125	40–45	100	80+70	220+100	100	20–22	सामान्य बुवाई, मोल्या रोधक किस्म।
	पी.बी.डब्ल्यू 343	140–150	50–60					22–23	सामान्य बुवाई, अधिक उर्वरता क्षेत्र।
	राज.3077	100–105	45–50					20–22	सामान्य,पछेती, लवणीय क्षेत्र।
	राज.4037	120–130	55–60					20–22	सामान्य बुवाई, गर्म जलवायु सहनशील।
	पी.बी.डब्ल्यू 550	128–135	45–58					22–23	सामान्य बुवाई।
	राज.3777	105–110	25–30	125				20–23	पछेती बुवाई (15 जनवरी तक)।
	राज.3765	117–122	45–50					20–23	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	पी.बी.डब्ल्यू 373	130–135	40–45					22–23	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	राज.4083	115–118	35–40					20–22	पछेती बुवाई, रोली रोधक।
	राज.4120	117–124	48–58	100				20–22	सामान्य बुवाई,यूजी 99 रोली रोधक।
	राज.4079	115–120	47–50	100				30–32	गर्म तापक्रम सहनशीलता, रोली रोधक।
	राज.4238	115–120	40–48	125				22–23	रोली, करनाल बन्ट रोधी, पछेती बुवाई
	के.आर.एल.210	130–140	40–50	100				20–22	क्षारीय व लवण सहनशील, पीली व भूरी रोली तथा अनावृत कण्डवा रोधी किस्म
जौ	आर.डी.2035	115–125	65–75	100	45+50	125+65	65	23–25	सिंचित क्षेत्र,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2052	120–125	45–65						मोल्या ग्रस्त व सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2503	120–125	45–55						सिंचित क्षेत्र,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2508	118–120	30–35						असिंचित क्षेत्र,देर से बुवाई।
	आर.डी.2552	125–130	50–60						सिंचित,सामान्य बुवाई, क्षारीय व लवणीय।
	आर.डी.2592	115–125	45–50						सिंचित,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2624	115–120	28–30						असिंचित,सामान्य बुवाई,मोल्या रोधी।
	आर.डी.2660	115–120	24–25						असिंचित,सामान्य बुवाई।
	आर.डी.2715	120–125	26–28						सिंचित ,हरा चारा (50–55 दिन)।
	आर.डी.2794	120–125	40–45						लवणीय व क्षारीय क्षेत्रों में सामान्य बुवाई वाले सिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त
चना	जी.एन.जी.1581 (गणगौर)	130–135	22–24	70–80	80+10	250+45	–	30–32	झुलसा, जड़ गलन रोधी, असिंचित।
	जी.एन.जी.1488 (संगम)	130–135	15–20						देर से बुवाई (दिसम्बर प्रथम सप्ताह), झुलसा, जड़ गलन रोधी।
	दाहोद यलो	90–105	15–20						पीले मोटे दानों वाली किस्म।
	आर.एस.जी 888 (अनुभव)	130–135	20–25						उखटा,जड़ गलन, सूखा सहनशील।
	सी.एस.जे.डी 884 (आकाश)	130–135	20–25						असिंचित, बारानी, उखटा, जड़ गलन
	आर.एस.जी. 974 (अभिलाषा)	125–130	20–25						उखटा, जड़ गलन, पाला सहनशील, पछेती, बारानी।
	आर.एस.जी.945 (आशा)	125–130	20–25						पछेती,उखटा व सूत्रकृमि प्रतिरोधी।
	आर.एस.जी.के.6 (आसार)	135–140	15–20	100					काबुली चना,जड़ गलन, सूत्रकृमि प्रतिरोधी।
	आर.एस.जी.896 (अपर्ण)	125–130	15–20	70–80					उखटा, जड़ गलन, बी.जी.एम. स्टन्ट वाइरस प्रतिरोधी।
	आर.एस.जी.991 (अपर्णा)	135–140	20–22						हरे चने की किस्म,जड़ गलन, उखटा रोग रोधी।
	सी.एस.जे.के–6 (अंजलि)	130–135	18–20						काबुली चना, उखटा व शुष्क जड़ गलन रोधी
सरसों	आर जी .एन.145	120–141	14–17	4–5	70+40	190+65	65	30–35	पछेती बुवाई (नवम्बर के अंतिम सप्ताह से दिसम्बर प्रथम सप्ताह)
	टी.59 (वरूणा)	125–140	15–18						सिंचित एवं असिंचित क्षेत्र।
	आर.जी.एन.229	146–150	20–25						बारानी खेती, तना गलन रोधी।
	आर.जी.एन.236	127–130	16–20						देरी से बुवाई।
	लक्ष्मी (आर.एच.8812)	140–150	20–22						मोटे दाने, सिंचित क्षेत्र।
	पी.आर.15 (क्रांति)	125–135	15–18						पाला,तुलासिता व सफेद रोली रोधी।
	बायो 902 (पूसा जय किसान)	130–140	18–20						तुलासिता, सफेद रोली व मुरझान रोधी।
	पी.सी.आर 7 (रजत)	130–140	15–20						बारानी क्षेत्र के लिए।
	आर.एन.505	125	14–15						पछेती,तना सड़न व पाला सहनशील।
	आर.एच.9304 (वसुन्धरा)	130–135	20–21						सफेद रोली रोधी।
	आर.जी.एन.73	125–130	22–25						सफेद रोली,पत्ती धब्बा रोग व पाला रोधी।
मेथी	आर.एम.टी.1	140–150	15–20	20–25	90+10	250+45	45	30	जड़ गलन, छाछ्या रोधी।
	आर.एम.टी.143	140–150	15–20						छाछ्या रोधी व भारी मिट्टी क्षेत्र।
	आर.एम.टी.305	120–130	18–20						छाछ्या रोग रोधी।
जीरा	आर.जेड.19	120–125	10–12	12–15	45+15	125+35	35	22.5–25	उखटा, छाछ्या व झुलसा रोधी।
	आर.जेड.209	120–125	10–12						छाछ्या रोधी किस्म।
	आर.जेड.223	120–130	10–12						उखटा व झुलसा रोधी।
	गुजरात जीरा.2	100–110	10–12						सामान्य सिंचित क्षेत्र।
	जी.सी.4	120	6–7						उखटा, छाछ्या व झुलसा रोधी।
धनियाँ	आर.सी.आर.41	140–145	10–12	15–20	65+40	190+65	65	30	तना सूजन व उखटा रोधी।
	आर.सी.आर.436	110–120	15–16						छाछ्या व लोंगिया रोग मध्यम प्रतिरोधी।
	आर.सी.आर.684	120–125	18–20						उखटा व छाछ्या रोधी।
	आर.सी.आर.480	115–118	18–20						उखटा व छाछ्या रोधी।
	सी.एस.6	120–125	15–18						मोटे दाने, सिंचित एवं असिंचित क्षेत्र।

अक्टूबर माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

• **रबी मक्का** की डी.एच.एम.– 117, एच. क्यू.पी.एम.–1, संकर गंगा सफेद–2, संकुल माही धवल, बायो–9681 एवं बायो–9637 किस्मों का 20–25 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से 15–20 अक्टूबर तक बुवाई करें।

• बारानी क्षेत्रों में **सरसों** की बुवाई 15 अक्टूबर तक कर देनी चाहिये। सिंचित क्षेत्रों में बुवाई अधिक से अधिक अक्टूबर के अन्त तक कर देनी चाहिये। सरसों में प्रति हैक्टर असिंचित क्षेत्र में 4 से 5 किलो व सिंचित क्षेत्र में 2.5 किलो उपचारित बीज कतारों में 30 सेंटीमीटर दूरी पर व पौधे से पौधे के बीच 10 सेंटीमीटर दूरी पर 5 सेंटीमीटर गहरा बोयें। देर से बुवाई करने पर उपज में भारी कमी हो जाती है, चेपा कीट तथा सफेद रोली रोग का प्रकोप भी अधिक होता है।

• तिलहन व दलहनी फसलों में बुवाई पूर्व 250 किलो **जिप्सम** प्रति हैक्टर डालें।

•असिंचित क्षेत्रों में **चने** को मध्य अक्टूबर तक व सिंचित क्षेत्र में अक्टूबर अन्त तक प्रति हैक्टर 80 किलो बीज 30 सेंटीमीटर की दूरी पर कतारों में बोयें।

• **जौ** के लिए उन्नत किस्म का 100 से 125 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से मध्य अक्टूबर से नवम्बर तक बोयें।

•**अलसी** की जवाहर–23, टी–397, आर. एल.102–71 (त्रिवेणी), प्रताप अलसी–1 उन्नत किस्म बोयें।

बागवानी

• **आम** के पौधों में इस माह में मिलीबग कीट का आक्रमण होने की संभावना रहती है। अतः शिशु कीटों को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए एल्काथिन (400 गेज) की 30 सेमी चौड़ी पट्टी जमीन से 2 फुट ऊँचाई पर तने के चारों तरफ बांधें एवं ग्रीस का लेप करें। यदि पेड़ों पर मिलीबग चढ़ गये हैं तो डाइमिथोएट 30 ई.सी. 1.5 मिली या फैनथियान 50 ई.सी. 1 मिली प्रति लीटर पानी में धोल बनाकर छिड़काव करें।

• **बेर** के फलों का आकार मटर के दाने के समान होने पर फल मक्खी कीट से बचाव के लिए मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. या डाइमिथोएट 30 ई.सी. दवा 1 मिली. प्रति लीटर के हिसाब से छिड़काव करें। इस माह यूरिया 600 ग्राम प्रति पौधे के हिसाब से डालकर सिंचाई करें।

सब्जियाँ

• **टमाटर** की सर्दी की फसल हेतु तैयार पौध का खेत में 75 x 75 सेमी. की दूरी पर रोपण करें। रोपण पूर्व खेत की तैयारी के साथ सड़ी गोबर की खाद 150 क्विंटल, नत्रजन 60 किलो, फॉस्फोरस 80 किलो व पोटाश 60 किलो प्रति हैक्टर की दर से मिलायें। इस माह में 6–7 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें।

• **रबी प्याज** की फसल के लिए नर्सरी में बीजों की बुवाई करें। एक हैक्टर हेतु 10 किलो बीज पर्याप्त होता है। लाल प्याज की उन्नत किस्में पूसा रेड, नासिक रेड, एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, आर.ओ.–59 एवं पीली प्याज की आर.ओ.–1 उन्नत किस्म है।

पुष्पोत्पादन

• **ग्लैडियोलस** के कंदों को 2 ग्राम बाविस्टीन एक लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 10–15 मिनट तक डुबोकर उपचारित करने के बाद 20–30 x 20 सेमी. पर 8–10 सेमी. की गहराई पर रोपाई करें। रोपाई से पूर्व क्यारियों में प्रति वर्ग मीटर 5 ग्राम कार्बोफ्यूरान अवश्य मिलायें। एक हैक्टर रोपाई के लिए लगभग 1.5–2 लाख कन्दों की आवश्यकता होती है।

• **गुलाब** के पौधों की कटाई–छँटाई करें।

मसाले

• **सौंफ** की आर.एफ.– 101/125/143/205 किस्म का 10–12 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें। बुवाई पूर्व प्रति किलो बीज को कार्बेन्डेजिम 50 डब्ल्यू.पी. दवा 2 ग्राम की दर से उपचारित कर बोयें।

• **धनियाँ** की आर.सी.आर.– 20/435/436/41/728, सी.एस.–6 या यू.डी.–

20 किस्म का एक हैक्टर में 10–12 किलोग्राम बीज का उपयोग करें। प्रति किलो बीज को 2.5 ग्राम बाविस्टिन या 2.5–3 ग्राम थाइरम से उपचारित कर बुवाई करें।

चारा फसलें

• **बरसीम** की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में प्रति हैक्टर 25–30 किग्रा. बीज दर के साथ 1–2 किग्रा. चारे वाली राई को मिलाकर करें। बुवाई से पूर्व अंतिम हैरो चलाते समय प्रति हैक्टर 20–30 किग्रा. नत्रजन एवं 80 किग्रा. फॉस्फेट का उपयोग करें। सदैव कासनी रहित एवं बरसीम कल्चर से उपचारित बीज का ही उपयोग करें।

• **बरसीम** की उन्नत किस्में वरदान, मस्कावी, पूसा जॉइन्ट, बी.एल.– 10, टी–780, टी– 724, टी–560 आदि हैं।

• **जई** की उन्नत किस्में केन्ट, ओ.एस.–6, यू.पी.ओ.–94 व ओ.एल.–9 हैं, इसकी बीज दर 100 किलो प्रति हैक्टर रखें।

परख

सितम्बर, 2014 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1.श्री मंवरसिंह राजपुरोहित,
ग्रा0–आकड़ावास पुरोहितान,
पो0–लाम्बिया, वाया– खैरवा,
मारवाड़ जक्शन,
जिला–पाली– 306501
2.श्री जयप्रकाश जैन,
पुत्र श्री मंवरलाल महाजन
ग्रा0 पो0– देवली गांव,
प0 सं0– देवली,
जिला– टोंक

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 रबी 2014–15 में चने की किस्मों की निर्धारित की गई विक्रय दर कितनी है?

प्र.2 फसलों में बुवाई पूर्व प्रति हैक्टर कितनी मात्रा में जिप्सम डालनी चाहिये?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब –
उप निदेशक, कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

•इस माह में सर्दी का मौसम शुरु हो जाता है, इसलिए पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबंध करें।

•भैंस व गाय को समय से ताव में लाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।

•पशुओं को बाह्य परजीवी से बचाव के लिए पशु चिकित्सक की सलाह से दवाई का छिड़काव नियमित करें।

•पशुओं को 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण व 20 ग्राम नमक रोजाना दें।

कल की बीमारियों का आज ही उपचार करें

कृषि में बीज की महत्ता को भुलाया नहीं जा सकता। बीज कृषि उत्पादन की प्रमुख कड़ी है। सही बीज का चयन करने के साथ–साथ यदि बीज को उपचारित कर बोया जाये तो कीड़ों व बीमारियों के नियन्त्रण के साथ पोषक तत्वों की उपलब्धता में बढ़ोतरी होती है, जिससे पैदावार बढ़ती है। बीजोपचार से फसलों में 10 से 15 प्रतिशत होने वाली हानि को कम किया जा सकता है। **बीजोपचार के लिए राज्य की सभी ग्राम पंचायतों पर "बीज उपचार ड्रम" उपलब्ध कराया गया है।** किसान भाई अपना बीज व दवा ग्राम पंचायत में ले जाकर निःशुल्क बीज उपचार कर सकते हैं। इस माह बोई जाने वाली रबी की प्रमुख फसलों में बीजोपचार इस प्रकार करें:–

सरसों

*सरसों के बीज को बुवाई से पूर्व 2.5 ग्राम मैन्कोजेब 75 डब्ल्यू.पी. या 3 ग्राम थाईरम 80 डब्ल्यू.पी. प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें।

*जिन क्षेत्रों में सफेद रोली रोग का प्रकोप ज्यादा होता है वहाँ मैटालेक्सिल 35 एस. डी. दवा की 6 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज को उपचारित करना चाहिये।

*बीज को 10 ग्राम ट्राईकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। इसके पश्चात् बीज को 3 पैकेट पी.एस.बी. व 3 पैकेट एजेटोबैक्टर कल्चर से उपचारित कर बुवाई करनी चाहिये।

चना

*जड़ गलन एवं सूखा जड़ गलन (राईजोक्टोनियाँ बटाटिकोला जनित रोग) व उखटा रोगों की रोकथाम के लिये कार्बेण्डेजिम 50 डब्ल्यू.पी. एक ग्राम एवं थाईरम 80 डब्ल्यू.पी. ढ़ाई ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें।

*जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप हो वहाँ फिप्रोनिल 5 एस.सी. 10 मिलिलीटर प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। वायर वर्म प्रभावी क्षेत्रों में बीज को 10 मिलिलीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर उपचारित करने के बाद बोयें।

*अन्त में बीज को राईजोबियम कल्चर 3 पैकेट प्रति हैक्टर से उपचारित करें।

जहाँ भूमि परीक्षण में मोलिब्डेनम तत्व की कमी पाई जाये वहाँ राइजोबियम कल्चर उपचार से पूर्व बीज को 3.5 ग्राम सोडियम मोलिब्डेट प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें।

जौ

*बीज द्वारा फेलने वाली बीमारियों जैसे आवृत्त कण्डवा एवं पत्तिधारी रोग से फसल को बचाने हेतु बीज को बोने से पूर्व 2.5 ग्राम मैन्कोजेब या 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

*जहाँ अनावृत्त कण्डवा रोग का प्रकोप हो, वहाँ 2 ग्राम वीटावैक्स या वीटावैक्स. + थाईरम (1 ग्राम + 1 ग्राम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। वीटावैक्स से बीज उपचार करने के बाद अन्य किसी फफूंदनाशी से उपचार की आवश्यकता नहीं है।

*यदि सिर्फ दीमक का ही प्रकोप हो तो बीज को फिप्रोनिल 5 एस.सी. 6 मिलिलीटर या क्लोथिएनिडीन 50 डब्ल्यू. डी.जी. 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करें।

*अन्त में बीजों को प्रति हैक्टर 3 पैकेट एजेटोबैक्टर व 3 पैकेट पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित करें। उपचारित बीजों को छाँया में सुखाने के तुरन्त बाद बुवाई करें।

कल्चर (संवर्ध) से बीजोपचार के लिए एक लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ गर्म करके घोल बनायें तथा घोल के ठण्डा होने पर 3 पैकेट (600 ग्राम) कल्चर मिलायें। इस मिश्रण में एक हैक्टर में बोई जाने वाली फसल के बीजों को इस प्रकार मिलायें कि सभी बीजों पर इसकी एक समान परत चढ़ जाये। इसके बाद बीजों को छाँया में सुखाकर शीघ्र बुवाई करें।

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"

घर बैठे वर्षभर खेती री बातां अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. RJ/JPC/M-16/2012-14
आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

समस्याग्रस्त खरपतवार झरमरी (लेन्टाना) का नियंत्रण कैसे करें

झरमरी (लेन्टाना) गैर फसलीय क्षेत्रों में पाया जाने वाला घातक खरपतवार है। इसको चतुरंगी, राइमुनिया, खनेरी, फूलकरी सेजेज आदि नामों से भी जानते है। यह एक बहुवर्षीय झाड़ीनुमा पौधा हैं। इसके पौधों की ऊंचाई प्रजातियों के अनुसार 2–8 फीट तक होती है। इसका तना काष्ठीय व रोयेदार होता हैं। पत्तियाँ रोयेदार हरी 3–8 इंच लम्बी होती है। पत्तियों के रगड़ने पर उनमें से एक विशेष प्रकार की गंध आती है। इसके फूल छोटे–छोटे गुच्छों में निकलते हैं जिनका रंग सामान्यतया पीला, सफेद, गुलाबी अथवा क्रीमी होता है। फल बेरी जैसे होते है। हमारे देश में लैन्टाना खरपतवार सन् 1809–10 में आस्ट्रेलिया से सजावटी पौधे के रुप मे लाया गया था। राजस्थान राज्य के उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बासवाड़ा, प्रतापगढ़ जिलों में बहुताहत से पहाड़ी क्षेत्रों, खाली स्थानों, अनुपयोगी भूमियों, औधोगिक क्षेत्रों, सड़क एवं रेलवे लाईन के किनारों आदि पर देखा जाता है। यह खरपतवार गर्म, समशीतोष्ण एवं ठंडी जलवायु में भी पाया जाता है। इसके बीजों का प्रकीर्णन पक्षियों द्वारा होता है।

इसकी तेजी से बढ़वार क्षमता एवं ऐलीलोपेथी गुण के कारण यह क्षेत्र में फटाफट फैल जाता है।

हानिकारक प्रभावः– लेन्टाना खतरनाक व विषाक्त पौधा है। इसकी पत्तियों एवं फलों में लेन्टाडेन एवं लेमकेमें रेन विषाक्त पदार्थ पाया जाता है जिसके कारण पशुओं द्वारा इसके खाने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो जाती है जैसे पीलिया, पशुओं को भूख नही लगना, मुहँ से लार निकलना, यकृत एवं गुर्दा खराब होना, प्रकाश के प्रति संवेदन होना तथा ज्यादा खाने पर मृत्यु भी हो जाती है। यह मलेरिया के मच्छरों एवं नुकसान दायक कीड़ो को आश्रय प्रदान करता है।

★कैसे काबू पाएः– लेन्टाना खरपतवार का समन्वित खरपतवार नियंत्रण के द्वारा काबू पाया जा सकता है।

★पोस्टर, पेम्पलेट, गोष्ठी के द्वारा जागरुकता उत्पन्न करना।

★ग्रस्ति क्षेत्रों में खरपतवार को काटकर जलाना जड़ों को उखाड़ देना।

★खरपतवार नियंत्रण के जैविक कारकों की संख्या बढ़ाने पर जोर देना जैसे पत्तियाँ खाने वाले भृंग, सीडफ्लाई, लीफ माइनिग बग, क्रोसिडोसिमा के लार्वा छोड़ना आदि परन्तु इन पर अनुसंधान की आवश्यकता है।

★गैर फसलीय क्षेत्रों में खरपतवार नाशी रसायनों का छिड़काव करना। लेन्टाना के पौधों को जमीन की ऊपरी सतह से काटकर कटे हुए भाग पर 2, 4 डी का 10 प्रतिशत घोल छिड़कने पर अच्छे परिणाम मिले है। ग्लाइफोसेट 2–3 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से लेन्टाना की रोकथाम की जा सकती है। लेन्टाना के प्रभावी नियंत्रण के लिए इसके पौधों को जमीन की सतह से 2 से 3 इंच ऊपर काट देना चाहिए। इसके 1 महिने बाद काटे हुए भाग से बहुत सी शाखाएं निकलती है इन शाखाओं पर ग्लाइफोसेट का 1 प्रतिशत (1 लीटर दवा 100 लीटर पानी में) का अच्छी तरह छिड़काव करने से इस पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

जिप्सम उपयोग का सही तरीका एवं उपयोगिता

•उपयोग किये जाने वाला जिप्सम पूर्ण रुप से महीन हो।

•उत्तम परिणामों हेतु जिप्सम को मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिये ताकि यह भली प्रकार घुलकर मिट्टी के घोल को संतृप्त कर दे।

•जिप्सम को फसल की बुवाई से पहले खेत में डालना चाहिये। बुवाई पूर्व 250 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर की दर से खेत में डालें। यदि खड़ी फसल में डालने की आवश्यकता पड़े तो इसके लिए खेत में पर्याप्त नमी हो और खेत में डालने के बाद इसे गुड़ाई करके अच्छी प्रकार मिला देना चाहिये।

•जिप्सम की दक्षता बढ़ाने के लिए हरी खाद या गोबर की खाद का उपयोग लाभप्रद पाया गया है।

•जिप्सम के उपयोग से तिलहनी, दलहनी व अनाज वाली फसलों (गेहूँ) की पैदावार में बढ़ोतरी के साथ–साथ उत्पादन की गुणवत्ता में बढ़ोतरी होती है, दाने सुडोल एवं चमकीले बनते हैं व तिलहनी फसलों में तेल की मात्रा बढ़ती है।

•जिप्सम उपयोग से भूमि भी स्वस्थ रहती है। यह गंधक का सर्वोत्तम व सस्ता स्त्रोत है।

अनुदानः– राज्य के किसानों को दलहनी, तिलहनी फसलों व गेहूँ की फसल पर 250 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर के लिए निर्धारित जिलेवार कुल दर का 50 प्रतिशत, अधिकतम 750/– रुपये प्रति हैक्टर प्रति कृषक अधिकतम 2 हैक्टर क्षेत्रफल तक अनुदान देय है। अधिक जानकारी के लिए नजदीकी कृषि कार्यालय में संपर्क करें।

संरक्षित पानी का बेहतर उपयोग करें

◆संरक्षित किये गये पानी की उपलब्धता के अनुरुप फसल योजना तैयार करें।

◆फसल की सिंचाई के लिये उन्नत तकनीक तथा फव्वारा/ बूँद–बूँद/ मिनि फव्वारा विधि का उपयोग करें।

◆पानी बिना नुकसान के खेत तक पहुँचे इसके लिए पाईप लाईन का उपयोग किया जाना चाहिये।

◆फसलों की क्रान्तिक अवस्थाओं पर ही सिंचाई करें।

◆फसलों एवं खेत को खरपतवारों से पूर्णतया मुक्त रखें।

◆यथा संभव कम पानी चाहने वाली एवं अल्प अवधि में पकने वाली फसलों/ किस्मों का चयन करें।

संतुलित उर्वरक डालें, उत्पादकता बढ़ायें

फसलों से प्रति ईकाई अधिक उत्पादन व उच्च गुणवत्ता प्राप्त करना, संतुलित खाद एवं उर्वरकों के उपयोग से ही संभव है। फसलों को पोषक तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने में रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग का महत्वपूर्ण योगदान है।

उर्वरकों से भरपूर फायदा उठाने के लिए कुछ खास बातेंः–

•फसलों में मिट्टी जौंच के आधार पर मृदा स्वास्थ्य कार्ड में सिफारिश की गई मात्रा के अनुसार संतुलित उर्वरकों का उपयोग करें।

•तिलहनी व दलहनी फसलों में नत्रजन व फॉस्फोरस तत्वों की आपूर्ति यूरिया तथा एस.एस.पी. उर्वरक से करना अच्छा रहता है। क्योंकि एस.एस.पी. में फॉस्फोरस 14.5 प्रतिशत के साथ–साथ गंधक 11 प्रतिशत व कैल्शियम 22 प्रतिशत तत्व भी पाये जाते हैं जो कि इन फसलों के लिए आवश्यक होते हैं। इस कारण से तिलहनी व दलहनी फसलों की उत्पादकता डी.ए.पी. के मुकाबले सिंगल सुपर फॉस्फेट के उपयोग से ज्यादा बढ़ती है।

•सिंगल सुपर फॉस्फेट अम्लीय प्रकृति का होता है, तथा सल्फर होने के कारण क्षारीय भूमि के सुधार में भी सहायक होता है।

•फॉस्फोरस उर्वरक पानी में घुलनशील होते हैं लेकिन खेत में डालने के बाद इसका बहुत बड़ा भाग पानी में अघुलशील हो जाता है और पौधों को डाले गये उर्वरक का लगभग 30 प्रतिशत भाग ही उपलब्ध हो पाता है। इस स्थिति से बचने तथा डाले गये डी.ए.पी. एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट का पूरा लाभ लेने के लिए बुवाई से पहले बीज को पी.एस.बी. कल्चर से जरुर उपचारित करें। एक हैक्टर के लिए आवश्यक बीज को 600 ग्राम (3 पैकेट) पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित करना चाहिये।

•फसल उत्पादन हेतु नत्रजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश का अनुपात 4:2:1 होना चाहिये। अतः तीनों पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए एन.पी.के. मिश्रण का उपयोग किया जाना चाहिये। विशेष रुप से सब्जियों एवं फल वृक्षों में एन.पी.के. मिश्रण का उपयोग ज्यादा लाभकारी रहता है। बाजार में एन.पी.के. मिश्रण आसानी से उपलब्ध है।

•उर्वरक को बीज से नीचे बुवाई से पहले ऊर कर देना चाहिये। इस हेतु बीज तथा उर्वरक ऊरने के यंत्र का उपयोग करें।

अतः फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लियेः–

•एन.पी.के. मिश्रण का उपयोग करें।

•तिलहनी व दलहनी फसलों में सिंगल सुपर फॉस्फेट का उपयोग करें।

•बीज को कल्चर से उपचारित कर बोयें।

•मिट्टी जाँच के आधार पर सूक्ष्म तत्वों का उपयोग करें।

आरा मक्खी एवं पेन्टेड बग प्रबन्धन

आरा मक्खी एवं पेन्टेड बग का प्रकोप प्राय सरसों की फसल उगते ही शरु हो जाता है। आरा मक्खी का अधिक प्रकोप होने पर पत्तियों के स्थान पर शिराओं का जाल ही शेष रह जाता है, जबकि पेन्टेड बग के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुँचाते हैं। जिससे पौधे कमजोर व पीले पड़कर सूख जाते हैं।

इन कीटों के नियन्त्रण हेतु मैलाथियॉन 5 प्रतिशत या मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 20–25 किलो प्रति हैक्टर की दर से सुबह या सायंकाल भुरकें अथवा मोनाक्रोटोफॉस 36 एस.एल. या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. एक लीटर दवा का छिड़काव करें।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक उप निदेशक, कृषि (सूचना), कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।
प्रकाशक – डॉ. अतर सिंह मीना
सम्पादक – डॉ. पूनम चौधरी
परामर्श – के.पी. यादव
डिजाइनर – आर. मैसी